

— अनु caus. *Gefallen finden an, für gut finden, erwählen*: स विचिह्य मकृतिज्ञा वनमेवान्वरोचयत् MBH. 3, 12679.

— अग्नि 1) med. *leuchten, in vollem Glanze erscheinen, prangen*: अग्नि-पाभिरुच्ये रामः R. 6, 86, 25. धर्मा ऽभिरोचते यस्माद्धर्मराजस्ततः स्मृतः MĀRK. P. 108, 16. — 2) *gefallen*: यदभिरोचते भवते VIKR. 21, 11. अग्निरुचितं *gefallend, erwünscht, genehm*: सायं तु स्त्रीसकृन्न वै — न ते ऽभिरुचितम् R. 6, 93, 18. यदभिरुचितं भवते VIKR. 21, 11, v. l. यदभिरुचितं तन्मे कृत्वा प्रिये मुखमास्पताम् Spr. 385. जलक्रीडाभिरुचितं वाराहं त्रयम् *Gefallen findend an* (vgl. HARIV. 12355) MBH. 3, 15829. जलक्रीडायामभिरुचितं प्रीतिर्यस्य NILAK. Vgl. यथाभिरुचित und अग्निरुचि. — caus. 1) act. *be- wirken, dass Jmd Gefallen findet, angenehm unterhalten*; mit acc. der Person: कथाभिरनुकूलाभी राजानं चाभ्यरोचयत् (चाभ्यरामयत् ed. Calc.) MBH. 13, 476 nach der Lesart der ed. Bomb. — 2) *Gefallen finden an, belieben, für gut finden, gern haben*; med.: जीर्णस्यास्य शरीरस्य विश्रा-न्तिमभिरोच्ये R. 2, 2, 6. न स्वर्गमप्यभिरोच्ये 30, 27. यन्मे मात्रा कृतं पापं नाहं तदभिरोच्ये R. GORR. 2, 88, 14. 3, 42, 18. 5, 51, 6. प्रयाणम् 73, 14. नाभिरोचयसे नेतुं त्वं मा केनैव हेतुना *warum willst du nicht?* R. SCHL. 2, 29, 19. act.: तद्वद्वेवाग्नु प्रस्थानमभ्यरोचयत् HARIV. 5713. R. 7, 26, 59. कथं विनिर्जिता सीतामस्माभिः सो ऽभिरोचयेत् 5, 59, 3. mit dat.: गमना-याभिरोचय *entschliesse dich zu* 1, 37, 2 (36, 2 SCHL.). मनसा चित्तयन्यापं कर्मणा नाभिरोचयेत् (नातिरोचयन् ed. Bomb.) so v. a. *nicht in's Werk zu setzen sucht* MBH. 5, 3314.

— अत्र med. *herabglänzen* AV. 3, 7, 3. — Vgl. अत्रोक्तिन्.

— आ med. *herglänzen*: दिवश्चिदा ते रुचयन् (vgl. गृभय्, कृपय्) रोकाः RV. 3, 6, 7. Vgl. आरोक्, आरोचन. — caus. med. *Gefallen finden an, bil- ligen, guthelssien*: तव सर्वमभिप्रायमविज्ञाय — वासं नरोचये ऽरण्ये R. 2, 30, 28. wohl fehlerhaft für न रोचये, wie die ed. Bomb. liest.

— उद् med. *erglänzen* AV. 13, 3, 23.

— उप med. *strahlend nahen*: (उषाः) उषा रुच्ये युवतिर्न योषा RV. 7, 77, 1.

— निस् act. *durch Glanz vertreiben*: निर्मयेा रुच्युर्निरु सूर्यः (अ-क्तिम् RV. 8, 3, 20.

— परि med. *ringsum leuchten*: रोचमानं BUĀG. P. 3, 21, 22.

— प्र med. 1) *hervorleuchten*: प्र रोच्यस्या उषसो न सूरः RV. 1, 121, 6. 3, 29, 14. प्र रोचना रुच्ये ऽण्वसंद्क् 61, 5. — 2) *einleuchten, gefallen*: किं प्ररोचते CAT. BR. 1, 6, 2, 3. 4. 3, 2, 2, 8. यथा तदृषिभ्यो यज्ञः प्ररोचत 11, 2, 2, 7. — caus. 1) *erleuchten, erhellen*: प्र व्यावा शोचिः पृथिवी अरो-चयत् RV. 1, 143, 2. 9, 75, 4. प्रात्ररुच्येदेसी 85, 12. *leuchten lassen*: प्रा-रोचयन्मनवे केतुमङ्गाम् 3, 34, 4. — 2) *scheinbar —, stattlich —, gefällig machen*: सा नो भूमे प्र रोचय क्तिरण्यस्येव संदृशि AV. 12, 1, 18. य एभ्यो यज्ञं प्ररोचयत् CAT. BR. 1, 6, 2, 5. 3, 9, 2, 28. TS. 2, 5, 21, 7. AIT. BR. 3, 9. *empfehlen, anpreisen*: विधिविहितमर्थवादप्ररोचितं मत्वेण स्मृतमभ्युदय-कारि भवति Cit. bei SĀJ. zu BAUDH. bei MÜLLER, SL. 170. — 3) *Gefallen finden an* (acc.), *gut befinden*: त्वया तु दुष्करः कस्मादिह वासः प्ररोचितः MBH. 3, 1574. — Vgl. प्ररोचन.

— संप्र med. *gefallen, gut scheinen*: अन्यं वरं वृणुधं वै यादृशं संप्ररो-चते MBH. 8, 1400.

— प्रति, प्रत्यरोचत MBH. 7, 1028 fehlerhaft für अत्यरोचत, wie die VI Theil.

ed. Bomb. liest. — caus. act. *Gefallen finden an* (acc.), *belieben, be- schliessen*: प्रस्थानम् MBH. 3, 11546.

— वि 1) *scheinen, erglänzen, glänzen, hell sein; erscheinen, sichtbar werden, — sein; einen Glanz um sich verbreiten* in übertr. Bed., *an- sehnlich werden, ein Ansehen haben, prangen*; med. RV. 1, 93, 2. अग्रे बृहदि रोचसे । त्वं धृतेभिराहृतः 2, 7, 4. 3, 29, 6. 5, 44, 2. 7, 3, 6. 8, 4. वि विद्युतो न वृष्टिभी रुचानाः 56, 13. वि रोचतामरुषो भानुना शुचिः 10, 43, 9. असावादित्या न व्यरोचत *die Sonne schien nicht* TS. 2, 1, 2, 4. CAT. BR. 5, 3, 2, 2. यस्येदं प्रदिशि पद्विरोचते *erscheint, sichtbar ist* AV. 4, 23, 7. 28, 1. 13, 1, 55. यो ब्राह्मणो विद्यामनुच्य न विरोचते *kein Ansehen ge- winnt* TS. 2, 1, 2, 8. — अक्रः प्रौष्ठपदे पूर्वं समारुच्य विरोचते MBH. 6, 82. तद्वनं बलमेधेन शरधारणा संवृतम् । व्यरोचत 1, 2844. प्रवृद्धजनसस्या च सर्वदेव व्यरोचत (भूमिः) 3719. संसृष्टं ब्रह्मणा तत्रं भूय एव व्यरोचत 3, 967. व्यरोचत यथा पूर्वं मान्धाता 1754. पिबुस्तस्या व्यरोचत 2704. 4, 1792. 5, 953. 13, 4809. 14, 2062. 2111. HARIV. 4314. Spr. 1282. 3437. R. 1, 31, 24. 44, 18. 27. 2, 1, 22. 98, 31 (107, 20 GORR.). R. GORR. 2, 67, 24. 3, 9, 35. 7, 37, 23. RAGH. 9, 51. 17, 14. 18, 50. BUĀG. P. 1, 9, 3. 19, 30. 2, 2, 11. 5, 7, 7. 10, 82, 8. MĀRK. P. 123, 19. व्यरोचिष्ट च रातसः BHATT. 13, 56. सर्वाण्यति च सैन्यानि भारद्वाजो व्यरोचत *überstrahlte* MBH. 7, 1028. act.: पारिजातवनानीव व्यरोचन्नुधिरौतितः *erschieneu wie* MBH. 7, 8551. Der Grammatik gemäss ist der aor. act. व्यरुचत् RAGH. 6, 5. KATHĀS. 66, 192. BHATT. 8, 66. — 2) act. *scheinen lassen, erhellen*: वि रुच्युः RV. 4, 7, 1. 10, 122, 5. — 3) med. *einleuchten, gefallen*: एतद्विनीषणोनाक्तम् — राधवस्य व्यरोचत R. 5, 92, 11. — Vgl. विरोक् u. s. w. — caus. 1) *schei- nen lassen, erhellen*: ज्योतीषि RV. 9, 36, 3. उषसः 86, 21. अत्ररुचिद् दि-वो रोचना 83, 9. प्रभया विरोचयतीं भवनम् BUĀG. P. 10, 2, 20. — 2) *Gefallen finden an*: युद्धमेव व्यरोचयम् R. 5, 56, 128. स्त्रीधर्मं सा व्यरोचयत् so v. a. *wurde geil* HARIV. 4383.

— अतिवि med. mit zum Ueberfluss wiederholten अति *überstrahlen*: अति सर्वाण्यनीकानि पिता ते ऽतिव्यरोचत MBH. 6, 1669. ऽभिव्यरोचत ed. Bomb.; vgl. सर्वाण्यति च सैन्यानि भारद्वाजो व्यरोचत 7, 1028.

— अभिवि med. *glänzen, strahlen*; s. u. अतिवि.

— सम् med. *gleichzeitig —, in die Wette scheinen*: यदुषो यासिं भ्रा-नुना सं मूर्येण रोचसे RV. 8, 9, 18. 9, 2, 6. VS. 37, 14. fg. CAT. BR. 14, 1, 2, 4. *glänzen, strahlen* BUĀG. P. 3, 13, 30. — caus. act. *Gefallen finden an* (acc.), *belieben, für gut befinden, beschliessen*: संन्यासम् MBH. 1, 627. तत्र निवासम् HARIV. 365. प्रस्थानम् R. 4, 38, 7. 5, 59, 7. *erwählen*: यत्पुत्रमा-त्मपितरं समरोचयत्सः *dessen Sohn er zu seinem Vater auserkor* Verz. d. Oxf. H. 253, a, 5.

2. रुच (= 1. रुच) f. 1) *Helle, Licht, Glanz* AK. 1, 1, 2, 35. H. 100. an. 1, 7. MED. K. 9. HALĀJ. 1, 38. 65. RV. 4, 56, 1. प्रवृद्धैश्चया रुचः 9, 9, 8. दृविद्युतत्या रुचा 64, 28. 96, 24. अया रुचा क्तिण्या पुनानः 111, 1. 10, 188, 3. VS. 12, 16. 13, 22. fg. 39. TS. 2, 1, 4, 1. भास्करं ° CĪC. 9, 23. RAGH. 9, 6. शाशि° MEGH. 45. Spr. 899. 2813. कषामपिसकृन्नरुचाम् CĪC. 9, 25. KIR. 5, 43. BUĀG. P. 3, 18, 2. 4, 12, 35. 30, 4. 11, 2, 27. पटु° SIDDH. K. zu P. 6, 3, 116. रुचे infin. s. u. 1. रुच 1). — 2) *Ansehen, Pracht* H. an. MED. स नः सखेव सख्ये नयौ रुचे भव RV. 9, 103, 5. 10, 106, 4. रुचं नो धे-हि ब्राह्मणेषु u. s. w. VS. 18, 48. AIT. BR. 1, 21. CAT. BR. 5, 3, 10, 3. 9, 4,